जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

3 अप्रैल - महावीर जयन्ती

महावीर की वीरता में दौड़-धूप, मारकाट, उछलकूद या हाहाकार नहीं; अनन्त शान्ति है । उनके व्यक्तित्व में वैभव की नहीं, वीतराग-विज्ञानता की विराटता है।

- ती.महावीर और सर्वोदय तीर्थ

वर्ष : 27, अंक : 1 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

भगवान महावीर स्तवन

जो निज दर्शन ज्ञान चरित अरु,
वीर्य गुणों से हैं महावीर।
अपनी अनन्त शक्तियों द्वारा,
जो कहलाते हैं अतिवीर।।
जिसके दिव्य ज्ञान दर्पण में,
नित्य झलकते लोकालोक।
दिव्यध्वनि की दिव्यज्योति से,
शिवपथ पर करते आलोक ।।

ह्न सम्पादक

महावीर की महानता

महावीर भगवान ! ज्ञान-सुख के निधान हो तुम्हीं महान ।
हो सुगुणों की खान अत: तव करता हूँ उत्तम सम्मान ।।
इससे नहीं महान कि तुम प्रभु समवशरण से मण्डित हो ।
छत्र-चंवर-भामण्डलादि नाना वैभव से सज्जित हो ।।1।।
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष के समय देवता आते हैं ।
ईति-भीति-दुर्भिक्ष आदि सब तुम्हें देख छिप जाते हैं ।।
यह सब तो लौकिक विभूतियाँ तुच्छ अक्ष सुख दायक है ।
किन्तु आप तो परम अतीन्द्रिय सुख अमृत आस्वादक हैं ।।2।।
अपरिग्रह हो जीवन में आचरण अहिंसामय होवे ।
हो विचार में अनेकान्त वाणी में स्याद्वाद होवे ।।
सर्ववस्तुयें हैं स्वतंत्र कोई न किसी का कर्त्ता है ।
है निमित्त परद्रव्य स्वयं खुद का धर्ता-संहर्ता है ।।3।।
क्रमनियमित परिणमन सभी का तथा सभी कुछ निश्चित है ।
वीतराग-सर्वज्ञ द्वारा ज्ञात और अवलोकित है ।।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है ।
और मूल इन सबका केवल एक आत्म आराधन है ।।4।।
जैनधर्म का यही सार बतलाया है भगवन तुमने ।
सत्य-सौख्य दिग्दर्शन से तुमको महान माना हमने ।।
इस वाणी का मर्म समझ जो इसमें श्रद्धा करता है ।
महावीरवत् बन महान निज में सुख-सागर भरता है ।।5।।

ह्न प्रमोदकुमार जैन, शाहगढ़
स्नातक, श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर

अहिंसा चैनल पर 3 अप्रैल से प्रात: 7 बजे

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचन विगत 5 माह से प्रतिदिन प्रात: 8.30 से 9 बजे तक अहिंसा चैनल पर प्रसारित हो रहे हैं; किन्तु **अब महावीरजयन्ती के शुभअवसर से डॉ.भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक होगा;** अत: सभी साधर्मीजन समय का ध्यान रखते हुए इन प्रवचनों का लाभ अवश्य लें ।

ध्यान रहे, सैटेलाइट जगत में जैनसमाज के धर्मलाभार्थ गाँधी जयन्ति के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2003 से अहिंसा चैनल (फ्री टू एयर चैनल) का प्रसारण प्रारंभ हो चुका है, जिसपर जैनधर्म के अहिंसा, शाकाहार, अनेकान्तवाद आदि विविध विषयों पर अनेक संतो, महात्माओं एवं विद्वानों के प्रवचन चल रहे हैं ।

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा धर्मप्रभावना

भिण्ड (म.प्र.): यहाँ दिनांक 12 से 26 मार्च 2004 तक समाज के विशेष आमंत्रण पर पधारे ब्र. यशपालजी जैन द्वारा प्रात: एवं रात्रि में दोनो समय प्रारंभ के पाँच गुणस्थान, कर्म की दस अवस्थायें आदि विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन तथा कक्षायें लेकर समाज में अपूर्व धर्मप्रभावना की गई ।

दोपहर में पाठशाला के विद्यार्थियों ने तथा समाज के अनेक युवा एवं प्रौढों ने कंठपाठ में विशेष उत्साह दिखाकर अनेक विषयों को कंठस्थ किया फलस्वरूप सभी को दिनांक 25 मार्च को शास्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया ।

भिण्ड में चल रहें युवा फैडरेशन के कार्य एवं पाठशाला के कार्य को देखकर ब्र. यशपालजी ने कहा कि अन्य स्थानों के समान भिण्ड शाखा का कार्य भी अत्यन्त सराहनीय है। अन्त में भिण्ड समाज द्वारा गुणस्थान संबंधी शेष विषय को समझने के लिए ब्र.यशपालजी को पुन: आमन्त्रित किया गया ।

भगवान ऋषभदेव जन्म जयन्ती समारोह

जयपुर (राज.): यहाँ दिनांक 14 व 15 मार्च, 2004 को श्री दिग. जैन भट्टारकजी की नसियाँ में राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में भगवान ऋषभदेव जन्म जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित विचार गोष्ठी की अध्यक्षता श्री महावीरप्रसादजी जैन-विधायक ने की। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित रतचन्दजी भारिल्ल ने ऋषभदेव एवं भरत-बाहूबली के सम्बन्ध में गहन चिन्तन प्रस्तुत किया। आपके अतिरिक्त श्री एम. ए. अन्सारी (पूर्व महानिदेशक-जेल) एवं श्री प्रवीणचन्दजी छाबड़ा (वरिष्ठ पत्रकार) ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संचालन श्री योगेशजी टोडरका ने किया ।

14 मार्च को प्रात: प्रभात फेरी एवं सायंकाल भक्तामर का काव्यपाठ किया गया तथा 15 मार्च को भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन भी किया गया ।

- महेन्द्रकुमार पाटनी

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

6

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा ४

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आगासं।
अत्थित्तम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता।।

(हरिगीत)

आकाश पुद्गल जीव धर्म अधर्म ये सब काय हैं।
ये हैं नियत अस्तित्वमय अरु अणुमहान अनन्य हैं।।4।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव पंचास्तिकायों का सामान्य-विशेष अस्तित्व तथा कायत्व बताते हुए कहते हैं कि ह्न जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म तथा आकाश अस्तित्व में नियत, अस्तित्व से अनन्यमय और अणु महान हैं।

इस गाथा की टीका करते हुए आचार्य अमृतचन्द्र ने जो कहा है, उसका भाव इसप्रकार है ह्न ''यहाँ पाँच अस्तिकायों की विशेष संज्ञा, सामान्य-विशेष अस्तित्व तथा कायत्व कहा है।

जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश ह्न यह पंचास्तिकाय की विशेष संज्ञाएँ अर्थ का अनुसरण करती हुई अन्वर्थ हैं, सार्थक हैं।

ये उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यमयी सामान्यविशेषसत्ता में नियत-व्यवस्थित-विद्यमान होने से इनके सामान्य-विशेष अस्तित्व भी हैं। वे द्रव्य अस्तित्व में नियत होने से जिसप्रकार बर्तन में रहनेवाला घी बर्तन से अन्यमय है, उसप्रकार अस्तित्व से अन्यमय नहीं है; क्योंकि वे सदैव अपने से निष्पन्न अर्थात् अपने से सत् होने के कारण अस्तित्व से अग्नि एवं उष्णता की भाँति अनन्यमय है।

यहाँ ज्ञातव्य है कि यह अस्तित्व में नियतपना नयप्रयोग से है। आगम में दो नय कहे हैं ह्न द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक। वहाँ कथन एक नय के आधीन नहीं होता, किन्तु दोनों नयों के आधीन होता है। इसलिए वे पर्यायार्थिक नय से तो अपने से कथंचित् भिन्न हैं; परन्तु अस्तित्व में व्यवस्थित होने से और द्रव्यार्थिक कथन से स्वयमेव सत् (विद्यमान) होने के कारण अस्तित्व से अनन्यमय ही है।

उनके कायपना भी है; क्योंकि वे अणुमहान हैं। यहाँ अणु अर्थात् प्रदेश के छोटे से छोटे निर्विभागीय अंश अणु है तथा उन अनेक अंशों से निर्मित अनेक प्रदेशी स्कन्ध को महान कहा है ह्न ऐसे अणु-महान प्रदेशों द्वारा निर्मित उपर्युक्त पाँचों द्रव्यों के कायत्व है।

जो दो अणुओं द्वारा महान हो, बड़ा हो वह भी अणुमहान है ह्न ऐसी व्युत्पत्ति से द्विअणुक पुद्गल स्कन्धों को भी कायत्व है।

परमाणु के व्यक्तिरूप से एकप्रदेशी तथा शक्तिरूप से अनेकप्रदेशी होने के कारण कायत्व सिद्ध होता है।

कालाणुओं को व्यक्ति अपेक्षा तथा शक्ति अपेक्षा से प्रदेशप्रचयात्मक महानपने का अभाव होने से यद्यपि वे अस्तित्व में नियत हैं, तथापि उनके अकायत्व है ह्न ऐसा इस कथन से ही सिद्ध हुआ; इसीलिए यद्यपि वे सत्-विद्यमान हैं; तथापि उन्हें अस्तिकाय के प्रकरण में नहीं लिया है।''

पाण्डे हेमराज द्वारा लिखित भावार्थ में उपर्युक्त कथन को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''पाँच अस्तिकायों के नाम उनके अर्थानुसार हैं।

यह पाँचों द्रव्य पर्यायार्थिकनय से अपने गुण-गुणी भेद से कथंचित् भिन्न अस्तित्व में विद्यमान हैं और द्रव्यार्थिकनय से अपने-अपने अस्तित्व से अनन्य हैं, अभिन्न हैं।

ये पाँचों द्रव्य कायत्ववाले हैं; क्योंकि वे अणुमहान हैं। अणुमहान की व्युत्पत्ति तीन प्रकार से है :-

(१) **अणुभि: महान्त: अणुमहान्त:** अर्थात् जो बहुप्रदेशों द्वारा बड़े हों, वे अणुमहान हैं। इस व्युत्पत्ति के अनुसार जीव, धर्म और अधर्म असंख्यप्रदेशीय होने से अणुमहान हैं; आकाश अनन्त प्रदेशी होने से अणु महान है; और त्रि-अणुक स्कन्ध से लेकर अनन्ताणुक स्कन्ध तक के सर्व स्कन्ध बहुप्रदेशी होने से अणुमहान हैं।

(२) **अणुभ्याम् महान्त: अणुमहान्त:** अर्थात् जो दो प्रदेशों द्वारा बड़े हों वे अणुमहान हैं। इस व्युत्पत्ति के अनुसार द्वि-अणु के स्कन्ध अणु महान हैं।

(३) **अणवश्च महान्तश्च अणुमहान्त:** अर्थात् जो अणुरूप एकप्रदेशी भी हों और महान-अनेकप्रदेशी भी हों वे अणुमहान हैं। इस व्युत्पत्ति के अनुसार परमाणु अणुमहान है; क्योंकि व्यक्ति-अपेक्षा से वे एकप्रदेशी हैं। इस व्युत्पत्ति के अनुसार परमाणु अणुमहान हैं; क्योंकि व्यक्तिअपेक्षा से वे एकप्रदेशी हैं और शक्तिअपेक्षा से अनेकप्रदेशी भी उपचार से हैं।

इसप्रकार उपर्युक्त पाँचों द्रव्य अणुमहान होने से कायत्ववाले हैं ह्न ऐसा सिद्ध हुआ।

कालाणु का अस्तित्व है, किन्तु किसीप्रकार भी कायत्व नहीं है, इसलिए वह द्रव्य है; किन्तु अस्तिकाय नहीं है।''

आचार्य जयसेन अपनी तात्पर्यवृत्ति टीका में लिखते हैं, उसका भाव इसप्रकार है ह्न

अनन्त जीवद्रव्य, अनन्त पुद्गलद्रव्य, एक धर्मद्रव्य, एक अधर्मद्रव्य, एक आकाशद्रव्य ह्न ये पंचास्तिकाय अपने सामान्य-विशेष अस्तित्व में निश्चित हैं और अपनी सत्ता से भिन्न नहीं हैं अर्थात् जो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यरूप है, वह सत्ता है और जो सत्ता है, वही अस्तित्व कहा जाता है। वह अस्तित्व सामान्य-विशेषात्मक है।

''(1) सभी पदार्थ हैं, इस अपेक्षा से सभी में सामान्यपना है एवं प्रत्येक भिन्न-भिन्न भी हैं, इस अपेक्षा वे विशेष हैं।

(2) द्रव्य में त्रिकाल सत्ता सामान्य है एवं वर्तमानावस्था विशेष है; अथवा ध्रुवपना सामान्य है एवं उत्पाद-व्ययपना विशेष है; इसप्रकार प्रत्येक पदार्थ अपनी सत्ता सामान्य एवं विशेष से भिन्न नहीं है।

जो उत्पाद-व्ययरूप है, वह सत्ता है और जो सत्ता है, उसे अस्तित्व कहते हैं और जो अस्तित्व है, वह सामान्य एवं विशेषात्मक है। पाँचों अस्तिकाय अपने-अपने अस्तित्व में है। अस्तित्व अपने द्रव्य से अभिन्न है। प्रत्येक द्रव्य का अस्तित्व उस द्रव्य से भिन्न नहीं है, कर्मपरमाणु उस द्रव्य से (पुद्गल द्रव्य से) भिन्न नहीं है। एकमेक हैं, पर आत्मा से भिन्न है।''

तात्पर्य यह है कि ह्न जैसे दूध और पानी एक साथ हैं, ऐसा कहने पर भी जैसे दूध और पानी भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं; वैसे ही कर्म मूर्त और आत्मा अमूर्त एकक्षेत्र में हैं, इसका स्पष्ट अर्थ है कि वे दोनों भिन्न हैं, वह भिन्नपना आत्मा के कारण नहीं है। आत्मा में विकार का उत्पाद आत्मा के कारण है, कर्म के कारण नहीं। इसप्रकार सच्ची श्रद्धा करने से शान्ति मिलती है।

सत्ता गुण स्वयं के द्रव्य से भिन्न नहीं है। सत्ता से सत्तावान अभिन्न है। इसप्रकार प्रत्येक वस्तु की सत्ता स्वयं से अभेद है किसी बर्तन में रखी हुई वस्तु के समान नहीं है। जैसे थाली में लड्डू है, डिब्बे में तेल है, वैसे द्रव्य में सत्ता गुण नहीं है; बल्कि जिसप्रकार तेल में चिकनाहट रहती है, उसीप्रकार द्रव्य में सत्ता रहती है। घड़े के स्पर्श, रस, गंध, वर्ण घट से भिन्न नहीं, जिसप्रकार अग्नि और ऊष्णता एक है ह्न भिन्न नहीं, उसीप्रकार आत्मा और उसका सत्ता गुण भिन्न नहीं है; बल्कि एकमेक है। आत्मा एक ओर रहे एवं उसकी सत्ता कहीं और रह जाय ऐसा प्रदेश भेद नहीं है, सत्ता और द्रव्य अभेद है।

आत्मा रागरहित है ह्न ऐसा निर्णय करने पर जो भावश्रुतज्ञान प्रगट होता है, उसके दो भेद हैं ह्न 1. द्रव्यार्थिकनय, 2. पर्यायार्थिक नय।

द्रव्यार्थिकनय ह्न जो ज्ञान का अंश आत्मा अथवा परमाणु के सामान्य धर्म को लक्ष में लेता है, त्रिकाली शक्ति को लक्ष में लेता है, उस ज्ञान के अंश को द्रव्यार्थिकनय कहते हैं।

पर्यायार्थिकनय ह्न जो ज्ञान का अंश आत्मा अथवा परमाणु की वर्तमान पर्याय को लक्ष में लेता है, उस ज्ञान के अंश को पर्यायार्थिकनय कहते हैं।

द्रव्यार्थिकनय से प्रत्येक द्रव्य अपने सत्तागुण से अभेद है एवं गुणभेद की अपेक्षा पर्यायार्थिकनय से अनेक-भेदस्वरूप है। आत्मा और परमाणु में सत्तागुण है। वह गुण-गुणी से अभेद है। सत्ता गुण और सत्तावान द्रव्य अभेद हैं। यह द्रव्यार्थिकनय का विषय है तथा पर्यायार्थिकनय का विषय गुण और गुणी में भेद बताना है।

इसप्रकार आत्मा और उसके सत्तागुण को अभेद से देखो तो एक है और गुण-गुणी के भेद से देखें अथवा पर्यायों से देखें तो अनेक हैं। इसीप्रकार परमाणु और उसके सत्तागुण को अभेद से देखा जाये तो एक है और भेददृष्टि से देखा जाये तो गुण एवं पर्यायें अनेक हैं। यहाँ भेद-अभेद दोनों एकवस्तु में ही घटित किये हैं। आत्मा और पुद्गल परमाणु तो त्रिकाल भेदस्वरूप ही हैं।

जिसप्रकार शरीर के हाथ-पैर आदि अवयव होने से शरीर को काया कहते हैं, उसीप्रकार आत्मा आदि के प्रदेश अनेक होने से उन्हें काय कहते हैं। चार द्रव्य अखंड कायवान हैं, उनमें से जिसके जितने प्रदेश हैं, उसमें से कम ज्यादा नहीं होते। परमाणु में स्कंधरूप होने की योग्यता है, अत: परमाणु को भी अस्तिकाय कहते हैं।

एक परमाणु जब दूसरे परमाणु से मिलकर स्कन्धरूप होता है तब स्कन्ध रूप होने पर भी परमाणु अपनी सत्ता नहीं छोड़ता। स्थूलरूप से अथवा सूक्ष्मरूप से परिणमित होने की प्रत्येक परमाणु की जो योग्यता है वह दूसरे परमाणु के कारण नहीं है।

यद्यपि स्वयं के रुक्षता एवं चिकनाहट गुणों के कारण परमाणुरूप स्कन्ध की अवस्था धारण कर व्यवहार से एक स्कन्ध कहलाता है तो भी प्रत्येक परमाणु स्वयं के एकरूप स्वभाव को नहीं छोड़ता। सदा एक ही द्रव्य रहता है।

इसप्रकार परमाणु जड़ होने पर भी अपनी शक्ति से कार्य कर रहा है।

इस गाथा का व्याख्यान करते हुए गुरुदेवश्री कानजी स्वामी ने कहा ह्न ''प्रत्येक पदार्थ स्वयं की सत्ता भिन्न बनाये रखता है। प्रत्येक द्रव्य सामान्य एवं विशेष अस्तित्व में निश्चित है। स्वयं की सत्ता से भिन्न नहीं है। सत्ता और सत्तावान अभेद है, भेद नहीं है। प्रत्येक परमाणु एक समय में स्वयं की उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप सत्तामय है। उत्पाद अर्थात् नवीन अवस्थारूप से उत्पन्न होना एवं व्यय अर्थात् पूर्व अवस्था का नाश होना और ध्रुव अर्थात् मूलवस्तु कायम रहना, सदृशरूप से रहना। इसप्रकार तीन मिलकर वस्तु एक है। एक जीव में जो उत्पाद-व्यय-ध्रुव हैं, वे ही उत्पाद-व्यय-ध्रुव दूसरे जीव के अथवा परमाणु के उत्पाद-व्यय-ध्रुव के कारण नहीं है; और परमाणु के उत्पाद-व्यय-ध्रुव जीव के उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य के कारण नहीं है। कोई भी पदार्थ स्वयं की सत्ता छोड़कर दूसरे को स्पर्श नहीं करता। आत्मा में अनंत गुणों की अवस्था एक समय में उत्पन्न हो और एक समय में व्यय हो और स्वयं ध्रुवरूप से कायम रहे, ऐसा होने से एक आत्मा दूसरे आत्मा का अथवा शरीरादि जड़ का कुछ कार्य नहीं करते। किसी की सत्ता अन्य पर आश्रित नहीं है। ऐसी श्रद्धा होने से यह अहंकार मिट जाता है कि मैं हूँ तो दूसरे लोग ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, दूसरे मुझसे डरें, मैं दूसरों के कारण डरूँ, मेरे प्रभाव से मेरे बालक मेरी बात मानें ह्न यह आकुलता नहीं रहती; क्योंकि प्रत्येक पदार्थ स्वयं के उत्पाद-व्यय-ध्रुव स्वभाव से टिका है।''

यहाँ जिन पाँच अस्तिकायों का स्वरूप बताया, उन्हें अर्थसमय कहते हैं। उन सभी को जैसे हैं वैसा जानने का कार्य ज्ञान का है। ज्ञान की विशेष अवस्था भी स्वयं के सामान्य ज्ञानस्वभाव के कारण प्रकट होती है; पर-पदार्थों के कारण प्रकट नहीं होती। **सभी को जानना मेरा स्वभाव है, पर को अपना मानना अथवा राग-द्वेष करना मेरा स्वभाव नहीं है** तथा कालद्रव्य सहित पाँचों अस्तिकाय पूर्ण स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी हैंह्न ऐसी वस्तुस्वरूप की महिमा जिसे ज्ञात हुई, उसे सत्य का माहात्म्य आने पर स्वभावसन्मुख होने पर साधकदशा उत्पन्न होती है और यही मोक्षमार्ग है। पूर्णरूप से सन्मुख होने पर वीतरागता और केवलज्ञान उत्पन्न होता है। यह पंचास्तिकाय को जानने का फल है। ●

जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी।

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंच

(सोमवार, दिनांक 3 मई से रवि

कार्यक्रम स्थल : वैद्य दाऊदयाल जोशी औषधालय

भारत की प्रसिद्ध शैक्षणिक एवं औद्योगिक नगरी कोटा में अध्यात्मजगत के शिरोमणी विद्वा
का आनंद प्रिय मंगल महोत्सव अनेक नवीनताओं सहित होने जा रहा है। जिसमें इटली के श्वे
प्रतिमा के साथ अन्य अनेक जिनबिंब भी प्रतिष्ठा-विधिपूर्वक विराजमान किये जायेंगे। अत:

विद्वत्समागम

बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर
पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी
पण्डित विमलदादाजी झांझरी उज्जैन
पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन

मांगलिक

प्रतिदिन प्रात: 5 बजे से पूज

3 मई – शांतिजाप, मंगल कलश एवं जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध्वजा
4 मई – घटयात्रा जुलूस, वेदी, कलश, ध्वज शुद्धि, गर्भकल्याण
5 मई – गर्भकल्याणक – 16 स्वप्नों का फल, माता व अष्ट दे
6 मई – जन्मकल्याणक – विशाल जुलूस, इन्द्र द्वारा ताण्डव नृ
7 मई – तपकल्याणक – नेमिकुमार की बारात, तपकल्याणक
8 मई – ज्ञानकल्याणक – आहारदान, समवशरण रचना, दिव्य
9 मई – मोक्षकल्याणक – गिरनार पर्वत रचना, रथयात्रा, श्रीज

परम संरक्षक
बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल'
संरक्षक
श्री अरिदमनलाल जैन
श्री गुलाबचन्द पोरवाल
श्री प्रेमचन्द बजाज
डॉ. मानमल जैन
श्री मदनलाल चांदवाड़
श्री प्रेमचन्द जैन पाण्ड्या
श्री वर्द्धमानकुमार जैन

अध्यक्ष
ज्ञानचन्द जैन
मो. 9828265549

महामंत्री
कमलचंद बोहरा
मो. 9414181774

संयोजक
राजेशकुमार सौगानी
नि.(0744) 2421737

आयोजक : श्री कुन्दकुन्द

वि

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, कोटा *श्री दि. जैन मु*